# सभा द्वारा प्राथमिक कक्षाओं की निर्धारित पाठ्य पुस्तकें ।

श्री टहल रामदीन

पाठ्यपुस्तक शिक्षण-कार्य में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है । छात्र इसी माध्यम से ज्ञानार्जन करते हैं । यदि पाठ्यपुस्तक छात्रों की रुचि तथा स्तरानुकूल हो तो शिक्षक को भी अपनी लक्ष्यपूर्ति के लिए कोई कठिनाई नहीं होती है । छात्र का सर्वांगीण विकास अपेक्षित विधि से होता है । हिंदी प्रचारिणी सभा लगभग नौ-दस दशकों से हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में कार्यरत है । आरम्भिक काल में सभा की सायंकालिक पाठशालाओं व बैठकाओं में बाल शिक्षा, सरल हिंदी और राष्ट्र-भाषा आदि पुस्तकें पढ़ाई जाती थीं जो भारत से मँगवायी जाती थीं ।

सर शिवसागर रामगुलाम के प्रस्ताव पर तत्कालीन सरकार ने भारतीय भाषाओं को प्राथमिक सरकारी पाठशालाओं में पढ़ाने का निर्णय लिया, पाठ्य-सामग्री तैयार और अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रो. रामप्रकाश जी मॉरीशस आए । उनके निर्देशन में नवीन हिंदी I-VI पुस्तकमाला तैयार की गयी । सभी पाठशालाओं में उन पुस्तकों का प्रयोग होने लगा । वे पुस्तकें कई वर्षों तक हमारी पाठशालाओं में भी चलीं ।

1980 में सरकार की ओर से शिक्षा-प्रणाली में सुधार लाने के उद्देश्य से प्राथमिक - पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाया गया, नवीन हिंदी शिक्षाक्रम से निकाल दी गयी । नवीन पाठ्य-सामग्री आयी, जिसमें हमारे धार्मिक एवं सांस्कृतिक तत्त्वों को घटा दिया गया । सरकार की इस भाषा-प्रसार नीति पर हिंदी प्रचारिणी सभा के सदस्यों ने अत्यन्त गम्भीरता से विचार किया और निर्णय लिया कि सभा की ओर से एक अलग पाठ्यपुस्तक माला तैयार करनी चाहिए । लगभग दस-पंद्रह वर्षों के प्रयास से गत् साल 2014 में I-VI सुगम हिंदी पाठ्यपुस्तक की कड़ी पूरी हो गयी । सभा से सम्बद्ध सभी पाठशालाओं व बैठकाओं में सुगम हिंदी का प्रयोग हो रहा है ।

सुगम हिंदी भाग़ I में 32 पाठों से छात्रों को 24 व्यंजन, 5 स्वर और 6 मात्राएँ सिखाने का प्रावधान है । हमने पाठों एवं वर्णों के चयन पर विशेष ध्यान दिया है । लेखन-प्रक्रिया की दृष्टि से सरल वर्णों का समवेश किया है, जो कम प्रयत्नों से लिखे जा सकते हैं । पुस्तक के तीन आरम्भिक पाठों में दो-दो वर्ण आये हैं और शेष पाठों में केवल एक ही वर्ण की प्रस्तुति हुई है ।

सुगम हिंदी भाग़ II भाग़ I की पूरक पाठ्यपुस्तक है । इसमें शेष सारे वर्षों को 24 पाठों के माध्यम से प्रस्तुत कर दिया गया है । इसा पुस्तक के पाठ लघु गद्यात्मक अर्थात पाँच-छः वाक्यों में एक नवीन वर्ण की प्रस्तुति हुई है; जिसे छात्र बहुत सुगमता से आत्मसात् कर लेते हैं ।

सुगम हिंदी भाग़ III में बीस गद्यात्मक पाठ हैं । कविता की ओर छात्रों की रूचि जागृत करने के लिए पाँच बाल कविताएँ भी हैं । इस पुस्तक में पठित वर्णों की आवृत्ति के साथ-साथ संयुक्ताक्षरों के स्वरूप और प्रयोग से अवगत कराया गया है ।

सुगम हिंदी भाग़ IV में 18 गद्यात्मक पाठ और पाँच कविता-पाठ समाविष्ट हैं । विषय-चयन में विविधता है, व्याकरण को औपचारिक रूप से इस पुस्तक में अत्यन्त सरल विधि से प्रस्तुत किया गया है । सुगम हिंदी भाग V में भी 18 पाठ दिये गये हैं । पाठ इतिहास, महापुरुष, प्राकृतिक सुषमा, कहानी, विज्ञान आदि से संबंधित विषयों पर आधारित हैं । स्थानीय कवियों की छः कविताएँ हैं । इस पुस्तक में अभ्यास-कार्य को विस्तार दिया गया है, जिसमें छात्र अधिकाधिक लाभ उठा सकें । सुगम हिंदी भाग VI में 18 गद्यात्मक तथा निबन्ध-शैली के पाठ हैं, छः कविताएँ हैं । छात्रों की रुचि एवं स्तरानुकूल गद्ध पाठों का चयन हुआ है । ज्ञान वृद्धि के लिए विविध अभ्यास-कार्य दिये गये हैं । प्रश्नपत्र का एक नमूना भी है । पाठ्यपुस्तकें तो प्रकाशित हाइ गयीं । एक स्वैच्छिक संस्था के लिएयह प्रयास अपने-आप में एक बड़ी उपलब्धि है । अब यदि शिक्षकों के सुझावों के आधार पर इनमें सुधार की आवश्यकता हो तो हम अवश्य करेंगे । ■

***(लेख - कोषाध्यक्ष श्री टहल रामदीन)***

हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है , बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है ।

*-"स्वामी विवेकानन्द"*

## कार्यशाला और श्रुतिलेख प्रतियोगिता

मंत्री धनराज शम्भु

हिंदी प्रचारिणी सभा सायंकालीन व सप्ताहांत स्कूल के शिक्षकों के निमित हर वर्ष कार्यशाला का आयोजन करती है। वर्ष 2015 से प्रवेशिका का पाठ्यक्रम बदल रहा है जो 2018 तक चलेगा। सभा ने इसी विषय को लेकर तीन जगहों पर अर्थात प्रांतीय स्तर पर एक एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। तिथि 4 अप्रैल को क्यूर्पिप में, ता. 11 अप्रैल को फ्लाक के मोर्डन कालेज में तथा अंतिम कार्यशाला ता. 18 अप्रैल को हिंदी भवन में हुई। 100 से अधिक प्रतिभागी उपस्थित रहे।

(मोर्डन कालेज, फ्लाक की कार्यशाला का एक चित्र)

नये पाठ्यक्रम के अनुसार सभा द्वारा चार नयी पुस्तकों की रचना हुई हैं : काव्य प्रवेश, सुगम हिंदी कहानी, सुगम संस्कृत तथा सुगम हिंदी व्याकरण। सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा प्रवेशिका परीक्षा-फल तथा प्रश्नपत्र पर जानकारी दी। श्री अजामिल माताबदल ने कहानी की पुस्तक तथा कहानिकारों के बारे में तथा संभावित प्रश्नों पर अपना विचार दिया। सभा के उपाध्यक्ष श्री तारकेश्वरनाथ ग्रिधारी ने सुगम संस्कृत पर शिक्षकों को काफ़ी जानकारियाँ दीं। सभा के मंत्री श्री धनराज शम्भु ने पाठ्यक्रम तथा काव्य प्रवेश पुस्तक पर प्रकाश डाला तथा यह भी संकेत किया कि व्याख्या करते समय छात्रों का ध्यान कविता संदर्भ पर भी होना चाहिए। सभा के कोषाध्यक्ष श्री टहल रामदीन ने व्याकरण पुस्तक पर शिक्षकों का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने शुद्ध बोलने तथा लिखने पर ज़ोर दिया। अंत में शिक्षकों की ओर से प्रश्न किये गए तथा कुछ सुझाव भी हुए।

ता. 4 अप्रैल को ही इन्हीं तीन केन्द्रों में पहली बार के लिए प्राथमिक स्कूल की पाँचवी कक्षा के छात्रों के लिए एक श्रुतिलेख प्रतियेगिता का आयोजन हुआ। भाग लेने वालों की संख्या कुछ कम रही पर पहली बार के लिए यह प्रतियोगिता सराहनीय रही। विजयी प्रतियोगियों को हिंदी दिवस के अवसर पर 22 अगस्त को पुरस्कृत किए जाएँगे। यह पुरस्कार श्रीमती रोहिनी रामरूप के नाम से प्रदान किया जाएगा। श्रुतिलेख प्रतियोगिता का आयोजन करने का हमारा उद्देश्य यह है कि छात्र शुद्ध उच्चारण तथा शुद्ध लिखाई पर ध्यान दें। शिक्षकों की और हमारा संकेत है कि वे सस्वर वाचन पर ध्यान दें तथा छात्रों को तैयार करें। ■ ***(विवरण-धनराज शम्भु)***

---

## सभा के प्रधान, मंत्री तथा कोषाध्यक्ष सम्मानित।

रविवार 25 जनवरी 2015 को हिंदी साहित्य आकादमी, मॉरीशस द्वारा त्रिओले के रामखेलावन सेवा सदन में आयोजित एक कार्यक्रम में हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान, मंत्री तथा कोषाध्यक्ष हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिए सम्मानित हुए। उस अवसर पर पूरे मॉरीशस के साहित्यकार तथा कई हिंदी के विद्वान उपस्थित थे। आकादमी के प्रधान डॉ. हेमराज सुन्दर ने आकादमी के कार्यों की एक झाँकी प्रस्तुत की तथा देश के कई विद्वानों को भी हिंदी सेवा में योगदान के लिए सम्मानित किया। समारोह में भारत की लेखिका डॉ. तनुजा चौधरी तथा उनके पति भी उपस्थित थे। साथ ही उनकी एक पुस्तक का भी लोकार्पण हुआ। श्रम मंत्री मान. कालीचर्ण, संसद रामकोण तथा कई गणमान्य अतिथि उत्सव की शोभा बढ़ा रहे थे।

ऐसे आयोजन से हिंदी प्रेमी तथा हिंदी के साहित्यकारों को जुटाने का एक अच्छा अवसर होता है। हम हिंदी साहित्य आकादमी, मॉरीशस के प्रधान एवं नॉर्ज़ेन आर्टिस आसोसिएशन के सदस्यों को हार्दिक बधाई देते हैं। ■

## संगोष्ठी के अवसर पर लिए गए कुछ चित्र।

हिंदी भवन में साहित्यिक सांस्कृतिक शोध संस्था के विद्वानों के साथ बैठे हुए सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु तथा सदस्य श्री अजामिल माताबदल ।

सभा के मंत्री श्री धनराज शम्भु डॉ. प्रवीण कुमार सिंह को सम्मानित करते हुए।

गोल्ड क्रेष्ट होटल, कात्र बोर्न में शोध संस्था के विद्वानों के साथ श्री यंतुदेव बुधु, श्री अजामिल माताबदल तथा श्री रामदेव धुरंधर।

गोल्ड क्रेस्ट होटल में भारतीय विद्वानों के साथ साहित्यकार रामदेव धुरंधर, श्री यंतुदेव बुधु ,डॉ. अलका धनपत, श्रीमती अंजली चिंतामणि तथा डॉ. झा।